बपतिस्मा: पूर्व शर्तें और आशिषें

बपतिस्मे से जुड़े कई सत्य इस प्रकार बताए जाते हैं कि कुछ लोग यह मानने लगते हैं कि बपतिस्मे के बहुत से अलग-अलग उद्देश्य हैं। इन वाक्यों में बहुत से उद्देश्यों को शामिल नहीं किया जाता, परन्तु इनकी निम्न चार श्रेणियां हैं:

क. *पूर्व शर्तें* - किसी व्यक्ति के लिए बपतिस्मा लेने के लिए कार्य, व्यवहार और आवश्यक संसाधन।

ख. *बपतिस्मे में आशिषों की इच्छा की जाती है* - इच्छाएं अलग-अलग ढंग से अभिव्यक्त की जाती हैं परन्तु सब का सम्बन्ध परमेश्वर से सम्बन्ध सुधारने के लिए पापों की क्षमा से जुड़ा होता है।

ग. *जीवन बदलना* - उद्धार पाने की इच्छा रखने वाले द्वारा मन से आज्ञा मानने का परिणाम।

घ. *उद्धार पाने वालों को मिलने वाली आशिषें* - मसीही जीवन का प्रत्येक लाभ या विशेषाधिकार पापों से शुद्ध होने और परमेश्वर से सम्बन्ध सुधरने के फलस्वरूप मिलता है।

आइए इन श्रेणियों पर ध्यान से नज़र डालते हैं:

क. पूर्व शर्तें:
1. यीशु और उसकी शर्तों को सुनना व समझना (प्रेरितों 18:8)।
2. सुसमाचार में बताए अनुसार यीशु में प्रभु और उद्धारकर्ता मानकर विश्वास करना (मरकुस 16:16)।
3. पाप से यीशु की सेवा करने की ओर बदलने का निश्चय करके मन फिराना (प्रेरितों 2:38)।
4 यीशु को प्रभु मानकर उसमें विश्वास का अंगीकार करना (रोमियों 10:10)।
5. गाड़े जाने और जी उठने (रोमियों 6:4; कुलुस्सियों 2:12) के लिए बहुत जल (यूहन्ना 3:23)।

ख. बपतिस्मे में जिन आशिषों की इच्छा की जाती है:
1. उद्धार (मरकुस 16:16; 1 पतरस 3:21)।
2. पापों की क्षमा व धोया जाना (प्रेरितों 2:38; 22:16; कुलुस्सियों 2:12, 13)।
3. यीशु की देह में प्रवेश (1 कुरिन्थियों 12:13)।
4. मसीह में आना (रोमियों 6:3)।
5. यीशु की मृत्यु में आना (रोमियों 6:3)।

ग. किसी का जीवन बदलना:
1. बपतिस्मे में यीशु की मृत्यु में साझी होने के कारण पाप से मृत्यु (रोमियों 6:1-4; कुलुस्सियों 3:3)।
2. नया जीवन (रोमियों 6:4)।
3. यीशु में नये जीवन की समानता (रोमियों 6:5)।

4. पुराना मनुष्य क्रूस पर चढ़ाया गया (रोमियों 6:6)।
5. शारीरिक अभिलाषाओं को मार दिया जाना (रोमियों 6:6)।
6. पाप की सेवा बंद करना (रोमियों 6:6, 18)।
7. पाप की शज़्ति से छुटकारा मिलना (रोमियों 6:7, 17, 18)।
8. धर्म की दासता (रोमियों 6:18)।
9. यीशु को पहनना (गलतियों 3:27)।
10. आत्मिक खतना कराना अर्थात शारीरिक अभिलाषाओं को छोड़ना या उतारना (कुलुस्सियों 2:11-13)।
11. आत्मिक रूप से जीवित किए गए (कुलुस्सियों 2:13)।
12. नये सिरे से जन्म पाए हुए (यूहन्ना 3:3-5)।
13. मसीह के साथ परमेश्वर में छुपा हुआ जीवन (कुलुस्सियों 3:3)।
14. उन सब लोगों के साथ एक होना जो मसीह यीशु में हैं (गलतियों 3:28)।

घ. उद्धार पाए हुओं को मिलने वाली आशिषें:
1. आनन्द (प्रेरितों 8:39)।
2. पवित्र आत्मा का दान (प्रेरितों 2:38; 5:32; गलतियों 4:6)।
3. आशा (1 पतरस 1:3, 4)।
4. परमेश्वर से संगति (यूहन्ना 14:21)।
5. दूसरे मसीहियों से संगति (प्रेरितों 2:42, 47)।
6. मसीह में आगे बढ़ने का अवसर (इफिसियों 4:15)।
7. प्रत्येक वह आत्मिक आशीष जो मसीही लोगों को मिलती है (इफिसियों 1:3)।
8. परमेश्वर द्वारा निरन्तर सज़्भाल करना (इब्रानियों 13:5)।
9. शुद्ध विवेक (1 पतरस 3:21)।

बपतिस्मा लेने के लिए, हमें बपतिस्मे की पूर्व शर्तों को पूरा करना आवश्यक है (जो ऊपर ''क'' के नीचे दी गई हैं)। विश्वास करने का अर्थ यीशु अर्थात जी उठे प्रभु पर भरोसा करना है। मन फिराने का अर्थ है कि हम अपने जीवन यीशु को देने के लिए पिछला जीवन छोड़ने का निश्चय कर लेते हैं। मसीह अर्थात परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु में विश्वास के अंगीकार का अर्थ उसे प्रभु के रूप में मानना है जो हमें हमारे पापों से छुड़ा सकता है (रोमियों 10:9, 10)।[1]

इन पूर्व शर्तों को पूरा किए बिना, बपतिस्मा पवित्र शास्त्र के अनुसार आत्मिक या भौतिक रूप से नहीं लिया जा सकता, और जिस कारण बदला हुआ जीवन नहीं हो सकता।

(''ख'' के नीचे) ''बपतिस्मे में जिन आशिषों की इच्छा की जाती है'' श्रेणी में दर्ज प्रत्येक बात क्षमा और परमेश्वर व मसीही लोगों के साथ नये सज़्बन्ध बनाना शामिल किया गया है। बपतिस्मा लेने के बाद, हमें यह समझना ज़रूरी है कि परमेश्वर से हमारा सज़्बन्ध सुधर रहा है। इस बात को समझे बिना हम यीशु के लहू में विश्वास नहीं कर सकेंगे जो कि हमारे पापों को धोने के लिए हमारा प्रायश्चित है (रोमियों 3:25)। इसलिए बपतिस्मा लेने पर क्षमा पाने के लिए यीशु के लहू में विश्वास रखने से पहले क्षमा की समझ होनी ज़रूरी है।

यही सच्चाई यीशु की बात में सिखाई जाती है कि सुसमाचार का प्रचार करने से ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा'' (मरकुस 16:16क)। सुसमाचार में यह तथ्य शामिल है ''कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा'' (1 कुरिन्थियों 15:3, 4)। दो अनिश्चित भूतकाल कृदंतों के साथ एक यूनानी उपपद का होना (''विश्वास करे'' और ''बपतिस्मा ले'') संकेत देता है कि दोनों का कार्य एक ही

समय होना है। इसे ध्यान में रखते हुए हम यीशु की बात में देख सकते हैं कि बपतिस्मा लेने वाले को बपतिस्मा लेते समय सुसमाचार अर्थात इस संदेश पर विश्वास करना आवश्यक है कि यीशु उसके पापों के लिए मरा। इसके अतिरिज़्त, हमें बपतिस्मे के बाद के नये जीवन को समझना भी आवश्यक है (''ग'' में दिए गए)। बिना आत्मिक समझ के लिए गए बपतिस्मे से कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। नया जीवन बपतिस्मे के समय यीशु की मृत्यु और गाड़े जाने के साथ हमारा आत्मिक संगति का परिणाम है। ''किसी का जीवन बदलना'' शीर्षक के नीचे दी गई सभी बातें इस विचार में मिलती हैं कि जब हम बपतिस्मा ले रहे होते हैं, तो हम क्षमा पाने और यीशु को समर्पित एक नया जीवन जीने के लिए पिछले जीवन को छोड़ रहे होते हैं।

हो सकता है कि हमें उद्धार पाने वालों को मिलने वाली सभी आशिषों का पता न लगे या उनकी समझ न आए। एक बार जब हम परमेश्वर से सज़्बन्ध सुधारने और यीशु को समर्पित नया जीवन जीने के लिए बपतिस्मा लेते हैं तो हमें असंज़्य आशिषें मिलती हैं। मसीही जीवन बिताते हुए हमें इनमें से अधिकतर (''घ'' में दी गईं) बातें स्पष्ट दिखाई देती हैं।

बपतिस्मे की तुलना विवाह से की जा सकती है। विवाह करने वाले व्यज़्ति को यह समझ होनी ज़रूरी है कि देश का कानून उसके बारे में ज़्या कहता है। विवाहित जीवन की कुछ आशिषों और लाभों की समझ तो हो सकती है, परन्तु सब बातों की समझ होनी ज़रूरी नहीं है। बहुत सी आशिषें विवाह समारोह के वर्षों बाद भी जुड़ सकती हैं।

बपतिस्मे में भी यही बात सत्य है: हमें विश्वास और यह समझ होनी आवश्यक है कि हमें पापों से क्षमा पाने के लिए ज़्या करना ज़रूरी है। हम बपतिस्मा लेने की इच्छा कर सकते हैं ज़्योंकि हमें उद्धार पाए हुओं को दी जाने वाली कुछ आशिषों की जानकारी है, परन्तु बपतिस्मा लेने के लिए हमें इन सभी मसीही आशिषों को समझना आवश्यक नहीं है। (इस पुस्तक के पृष्ठ page 31 से आरज़्भ होने वाले पाठ ''बपतिस्मे में ज्ञान, विश्वास और संकल्प'' देखें)।

प्रेरितों 2:38 में *eis* (एक यूनानी शज़्द है जिसका मूल अर्थ ''into'' पानी ''में'' है) शज़्द का अनुवाद ''के लिए'' हुआ है। प्रेरितों 19:5 में इसी शज़्द का अनुवाद ''का'' हुआ है। पापों की क्षमा ''के लिए'' (यू.: *eis*) बपतिस्मा लेने में, हमें ''क्षमा'' की समझ होनी भी ज़रूरी है। इसी प्रकार, हमें उस नाम की भी समझ होनी आवश्यक है जिस ''में (का)'' (यू.: *eis*) हम बपतिस्मा ले रहे हैं। यदि हमारा विश्वास है कि हम यीशु के नाम के अतिरिज़्त किसी और नाम में बपतिस्मा ले रहे हैं, तो हमारा बपतिस्मा स्वीकार्य नहीं है, ज़्योंकि उद्धार किसी दूसरे नाम से नहीं हो सकता है (प्रेरितों 4:12)। जैसे *eis* शज़्द का इस्तेमाल एक समझ और उस नाम की स्वीकृति का बोध कराता है जिसमें हम बपतिस्मा ले रहे होते हैं, वैसे ही यह क्षमा की उस समझ का भी बोध कराता है जिसमें हम बपतिस्मा ले रहे होते हैं। क्षमा के अलावा किसी भी दूसरे कारण से लिया गया बपतिस्मा यीशु के नाम के अलावा किसी दूसरे नाम में लिए गए बपतिस्मे की तरह ही गलत है।